

सूरह फज्र^[1] - 89

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरह फज्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वल फज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थितियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्व्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भोर की!
2. तथा दस रात्रियों की!
3. और जोड़े तथा अकेले की!
4. और रात्री की जब जाने लगे!
5. क्या उस में किसी मतिमान
(समझदार) के लिये कोई शपथ है?^[1]

وَالْفَجْرِ
وَلَيَالٍ عَشْرٍ
وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ
وَاللَّيْلِ إِذَا يَنسَرُ
هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرِ

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विषयक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ।
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।^[1]
15. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۖ

إِرمَ دَاتِ الْعِمَادِ ۖ

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۖ

وَشَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۖ

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۖ

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۖ

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۖ

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۖ

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्लाह ही इसे चला रहा है। "दस रात्रियों" से अभिप्राय "जुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

- 1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे कुर्आन तथा अरब में "आदे ऊला" (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं० 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एवं सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।

17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।

18. तथा गरीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।

19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।

20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।^[1]

21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।

22. और तेरा पालनहार स्वयं पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।

23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी।

24. वह कामना करेगा कि काश! अपने

وَنِعْمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَ ۝

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝

كَلَّا بَلْ لَا تَكْفُرُونَ الْيَتِيمَ ۝

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۝

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝

وَجِئْنِي يَوْمَ يُبْعَثُ الْجَهَنَّمُ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ
الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۝

يَقُولُ يَلْبِثُنِي قَدَمْتُ لِحَيَاتِي ۝

1 (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्लाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिसाब लिया जाये?

सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।

25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान कोई दण्ड नहीं देगा।

26. और न उसके जैसी जकड़ कोई जकड़ेगा।^[1]

27. हे शान्त आत्मा!

28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।

29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।

30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।^[2]

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۖ

وَلَا يُؤْثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۖ

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۖ

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۖ

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۖ

وَادْخُلِي جَنَّتِي ۖ

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि कुर्आन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुर्आन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शांती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।